Chapter 1: Sakhi - Sant Kabir

साखी - संत कबीर

1. Poet Introduction: Sant Kabir

- जन्म: 1398 ई. (लगभग), काशी (वाराणसी) में एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से जन्मे, जुलाहा दंपति नीरू और नीमा ने पाला
- मृत्यु: 1518 ई. (लगभग), मगहर (उत्तर प्रदेश) में
- गुरु: स्वामी रामानंद जी - कबीर ने बड़ी चतुराई से रामानंद जी को गुरु बनाया
- पारिवारिक जीवन: कबीर विवाहित थे, उनकी पत्नी का नाम लोई था, पुत्र कमाल और पुत्री कमाली
- व्यवसाय: जुलाहे का काम करते थे, अपने हाथों से कपड़ा बुनकर जीविका चलाते थे
- भाषा: सधुक्कड़ी भाषा - हिंदी, अवधी, ब्रज, पंजाबी, खड़ी बोली, अरबी-फारसी शब्दों का अद्भुत मिश्रण
- काव्य शैली: साखी (दोहे में उपदेश), सबद (पद - गेय रचनाएं), रमैनी (चौपाई शैली में दार्शनिक विचार)
- मुख्य विचारधारा: निर्गुण ब्रह्म की उपासना, एकेश्वरवाद, रूढ़िवाद का कठोर विरोध
- समाज सुधारक: जाति-पाति, छुआछूत, धार्मिक आडंबर, और बाह्य दिखावे का खंडन किया

2. Historical and Social Context

- समय काल: 15वीं-16वीं सदी - भक्ति आंदोलन का स्वर्ण युग
- राजनीतिक स्थिति: दिल्ली सल्तनत का पतन काल, लोदी वंश का शासन, मुगल साम्राज्य की स्थापना की पूर्व बेला
- धार्मिक वातावरण: हिंदू-मुस्लिम संघर्ष, कट्टरता, धार्मिक कर्मकांडों की अधिकता
- सामाजिक समस्याएं: जाति व्यवस्था की कठोरता, छुआछूत, नारी की दुर्दशा, अंधविश्वास
- भक्ति आंदोलन: कबीर निर्गुण भक्ति धारा के प्रमुख स्तंभ, रामानंद, नानक, रैदास आदि समकालीन संत
- कबीर का योगदान: समाज में फैली कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठाई, हिंदू-मुस्लिम एकता का संदेश दिया

3. Literary Philosophy and Ideology

- निर्गुण ब्रह्म की उपासना: कबीर ने निराकार, गुणातीत परमात्मा की भक्ति पर बल दिया। उनके अनुसार ईश्वर सर्वव्यापी है, मूर्ति में नहीं
- उदाहरण: "पत्थर पूजे हरि मिलै, तो मैं पूजूं पहाड़। ताते यह चाकी भली, पीस खाय संसार।।"
- मूर्ति पूजा का विरोध: कबीर ने कहा कि पत्थर की मूर्ति पूजने से ईश्वर नहीं मिलता, असली पूजा हृदय की शुद्धता में है
- धार्मिक आडंबर का खंडन: माला फेरना, तीर्थ यात्रा, व्रत-उपवास जैसे बाहरी दिखावों को निरर्थक बताया
- हिंदू-मुस्लिम एकता: "हिन्दू कहत राम हमारा, मुसलमान कहत खुदाया। कहत कबीर सुनो हो भाई, एक ही नाम धियाया।।"

- गुरु की महिमा: कबीर ने गुरु को ईश्वर से भी ऊंचा स्थान दिया - "गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पांय। बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।।"
- अनुभवजन्य ज्ञान: कबीर अनपढ़ थे लेकिन उनका ज्ञान प्रत्यक्ष अनुभव और आत्म-साक्षात्कार पर आधारित था
- सहज योग: कठोर साधना और तपस्या के बजाय सहज, सरल जीवन जीने पर जोर

4. Detailed Explanation of Sakhis

साखी 1: "माला फेरत जुग गया, फिरा न मन का फेर..."

पूर्ण साखी: "माला फेरत जुग गया, फिरा न मन का फेर। कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर।।"

- शब्दार्थ: माला = जप माला, जुग = युग (लंबा समय), फेर = परिवर्तन/घुमाना, मनका = माला के दाने, कर = हाथ
- भावार्थ: कबीर कहते हैं कि लोग युगों से हाथ में माला लेकर उसे घुमाते रहे हैं, लेकिन मन का भटकाव दूर नहीं हुआ। हाथ की माला फेरने से क्या लाभ? असली माला तो मन की है, उसे फेरना चाहिए।
- गहरा अर्थ: बाहरी क्रियाकलापों से भगवान नहीं मिलता। मन को शुद्ध करना, विकारों से मुक्त करना ही असली भक्ति है।
- प्रतीक: हाथ की माला = बाहरी आडंबर, मन की माला = आंतरिक शुद्धता
- संदेश: धर्म दिखावे में नहीं, हृदय की पवित्रता में है

साखी 2: "मानसरोवर सुभर जल, हंसा केलि किराहिं..."

पूर्ण साखी: "मानसरोवर सुभर जल, हंसा केलि किराहिं। मुकताहल मुकता चुगैं, अब उड़ि अनत न जाहिं।।"

- शब्दार्थ: मानसरोवर = ज्ञान का तालाब, सुभर = भरा हुआ, हंसा = हंस (ज्ञानी), केलि = क्रीड़ा, मुकताहल = मोती, अनत = कहीं और
- भावार्थ: ज्ञान रूपी मानसरोवर में हंस (ज्ञानी भक्त) क्रीड़ा करते हैं। वे ज्ञान रूपी मोती चुगते हैं और अब कहीं और नहीं जाना चाहते।
- विशेष: हंस नीर-क्षीर विवेक के लिए प्रसिद्ध है - दूध में पानी मिला हो तो हंस केवल दूध पी सकता है
- प्रतीक: हंस = सच्चा भक्त/ज्ञानी, बगुला = पाखंडी (जो केवल दिखावा करता है), मानसरोवर = ब्रह्मज्ञान
- तुलना: हंस और बगुला दोनों जल में रहते हैं, लेकिन हंस विवेकशील है और बगुला धोखेबाज
- संदेश: सच्चे और झूठे भक्त में भेद करना आवश्यक है

साखी 3: "पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय..."

पूर्ण साखी: "पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय। ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।।"

- शब्दार्थ: पोथी = धर्म ग्रंथ, जग = संसार, मुआ = मर गया, ढाई आखर = प्रेम शब्द (प्र + ् + म)
- भावार्थ: बड़े-बड़े ग्रंथ पढ़कर लोग मर गए, लेकिन सच्चा पंडित कोई नहीं बन सका। जो प्रेम के ढाई अक्षर को समझ ले, वही असली विद्वान है।
- गहरा संदेश: किताबी ज्ञान से ज्यादा महत्वपूर्ण है प्रेम और करुणा का भाव
- व्यंग्य: तथाकथित पंडितों पर जो केवल किताबें रटते हैं लेकिन व्यवहार में धर्म नहीं उतारते

5. Key Themes and Messages

- बाह्य आडंबरों का कठोर खंडन: मंदिर-मस्जिद, तीर्थ यात्रा, माला फेरना, व्रत-उपवास - सब दिखावा है
- आत्मज्ञान की सर्वोच्चता: बाहरी ज्ञान से ज्यादा आत्म-साक्षात्कार महत्वपूर्ण है
- गुरु की अनिवार्यता और महिमा: सच्चा गुरु ही ईश्वर तक पहुंचने का मार्ग दिखाता है
- सामाजिक समानता का संदेश: सभी मनुष्य समान हैं, जाति-पाति व्यर्थ है
- हिंदू-मुस्लिम एकता: राम और रहीम एक ही हैं, धर्म के नाम पर लड़ाई बेकार है
- प्रेम और भक्ति का महत्व: निस्वार्थ प्रेम ही सच्ची भक्ति है, यही मोक्ष का मार्ग है
- कर्म की प्रधानता: केवल पूजा-पाठ से नहीं, अच्छे कर्मों से ईश्वर प्राप्ति होती है
- अहंकार का त्याग: अहंकार सबसे बड़ा शत्रु है, विनम्रता अनिवार्य गुण है

6. Literary Devices and Poetic Beauty

- भाषा: सधुक्कड़ी - पंचमेल खिचड़ी भाषा, जनभाषा, सरल और प्रभावशाली
- विशेषता: कबीर की भाषा में हिंदी, अवधी, ब्रज, पंजाबी, खड़ी बोली, अरबी-फारसी के शब्द
- छंद: दोहा छंद (13-11 मात्राएं का नियम)
- अलंकार विधान:

- रूपक अलंकार: मानसरोवर = ज्ञान, हंस = ज्ञानी भक्त, माला = भक्ति
- प्रतीक योजना: हाथ की माला बनाम मन की माला
- विरोधाभास: "गुरु कुम्हार शिष कुंभ है" - गुरु को कुम्हार और शिष्य को घड़ा बताना

- शब्द शक्ति: लक्षणा (सांकेतिक अर्थ) और व्यंजना (छिपा हुआ अर्थ) का सशक्त प्रयोग
- मुहावरे और लोकोक्तियां: "माला फेरना", "पत्थर पूजना", "पोथी पढ़ना"
- उलटबांसियां: कबीर की कुछ साखियां उलटबांसी शैली में हैं - "हस्ती चढ़िये ज्ञान कौ, सहज दुलीचा डारि"
- बिंब विधान: सजीव चित्र खींचना - हंस-बगुला, कुम्हार-घड़ा, बगीचा-माली

7. Important Exam Questions

प्रश्न 1: कबीर ने माला फेरने को व्यर्थ क्यों कहा है? विस्तार से समझाइए ।
उत्तर: कबीर के अनुसार बिना मन की एकाग्रता और शुद्धता के केवल हाथ में माला लेकर घुमाना व्यर्थ है । लोग युगों से माला फेर रहे हैं लेकिन उनके मन का भटकाव दूर नहीं हुआ । असली भक्ति बाहरी दिखावे में नहीं, हृदय की पवित्रता में है । कबीर कहते हैं कि हाथ की माला छोड़ दो और मन की माला फेरो - यानी मन को विकारों से मुक्त करो, सच्चे भाव से ईश्वर का स्मरण करो ।

प्रश्न 2: हंस और बगुले के प्रतीक के माध्यम से कबीर क्या संदेश देना चाहते हैं?
उत्तर: कबीर ने हंस को ज्ञानी और विवेकी भक्त का प्रतीक बताया है जो सार-असार में भेद कर सकता है, जबकि बगुला पाखंडी का प्रतीक है जो केवल बाहरी दिखावा करता है । हंस मानसरोवर (ज्ञान) में क्रीड़ा करता है और ज्ञान रूपी मोती चुगता है, जबकि बगुला केवल सतह पर रहता है । संदेश यह है कि समाज में सच्चे और झूठे भक्तों में अंतर करना चाहिए ।

प्रश्न 3: "ढाई आखर प्रेम का" से कबीर का क्या तात्पर्य है?
उत्तर: कबीर कहते हैं कि बड़े-बड़े धर्म ग्रंथ पढ़कर लोग मर गए लेकिन सच्चा पंडित कोई नहीं बन सका । असली ज्ञान प्रेम के

■■■ ■■■■■ (■■■ + ■ + ■) ■■ ■■■■■ ■■■ ■■■ ■■■■■■ ■■■■■ ■■ ■■■■■■ ■■■■■■■ ■■ ■■■ ■■, ■■■ ■■■■■ ■■■■■■■ ■■■

प्रश्न 4: कबीर की भाषा शैली की प्रमुख वशिषताएं लखिए।
उत्तर: (1) सधुक्कड़ी भाषा - वभिन्नि भाषाओं का मश्रिण, (2) सीधी-सरल अभव्यिक्ति- जनसामान्य की भाषा, (3) प्रतीकों और रूपकों का सशक्त प्रयोग, (4) दोहा छंद का उपयोग, (5) मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग, (6) व्यंग्यात्मक शैली - पाखंड और आडंबर पर चोट

प्रश्न 5: कबीर के समाज सुधारक रूप पर प्रकाश डालिए।
उत्तर: कबीर केवल कवि ही नहीं, महान समाज सुधारक भी थे। उन्होंने: (1) जाति-पाति और छुआछूत का विरोध किया, (2) हिंदू-मुस्लिम एकता का संदेश दिया, (3) धार्मिक आडंबरों और कर्मकांडों का खंडन किया, (4) नारी सम्मान की बात कही, (5) अंधविश्वास और रूढ़ियों के खिलाफ आवाज उठाई, (6) सामाजिक समानता का प्रचार किया।